Downloaded From: http://cbseportal.com

संस्कृत (ऐच्छिक)

lLÑr ikB;Øe ¼,sfPNd½
d{kk XI-XII

Hkwfedk

संस्कृत विश्व की एक प्राचीनतम भाषा है। यह अधिकांश भारतीय भाषाओं की जननी एवं सम्पोषिका रही है। भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, इतिहास, पुराण, भूगोल, राजनीति एवं विज्ञान की मूल स्रोत संस्कृत भाषा आज भी भारत का गौरव एवं प्राण है तथा जीवन्त रचनात्मकता का साक्ष्य भी प्रस्तुत करती है। राष्ट्रीय भावात्मक एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना के विकास में संस्कृत का योगदान विशिष्ट रहा है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु मानवीय मूल्यों की उदात्त व्याख्या कर *'वसुधैव कुटुम्बकम्'* के आदर्श की स्थापना करना संस्कृत की एक अनुपम देन है। अतः राष्ट्र की इस अमूल्य निधि को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना आवश्यक है।

संस्कृत को केवल एक प्राचीन भाषा मानना ही पर्याप्त नहीं है। आधुनिक संस्कृत अन्य भाषाओं की तरह भारतीय बहुभाषिकता की एक अभिन्न अंग भी है। जिस प्रकार संस्कृत अन्य भाषाओं के सीखने व बौद्धिक विकास में एक बहुभाषी कक्षा में सहायक सिद्ध होती है, ठीक उसी प्रकार संस्कृत सीखने में कक्षा में सहज उपलब्ध बहुभाषिकता का उपयोग किया जा सकता है। बहुभाषिकता के प्रति आदर एक ऐसा सशक्त दृष्टिकोण है, जिससे भाषा–शिक्षण की पूरी विधि ही बदल सकती है। श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन भाषा–कौशलों का विकास पाठों पर ही आधारित होगा। यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों के लिए पाठ समग्र रूप में सार्थक हो, जिससे भाषा के सभी तत्व सहज ग्राह्य हो जायेंगे।

इसी दृष्टिकोण से वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर (कक्षा XI-XII) ऐच्छिक विषय के रूप में संस्कृत के पठन–पाठन का प्रावधान किया गया है।

lkekU; mís';

इस स्तर पर संस्कृत के पठन–पाठन के उद्देश्य निम्नांकित हैं :

- विद्यार्थियों में संस्कृत साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना तथा उसकी विविध विधाओं से परिचित कराना।
- संस्कृत भाषा के सामान्य ज्ञान को सुदृढ़ करना तथा उसकी प्रकृति से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
- संस्कृत भाषा के विविध प्रयुक्तियों एवं शैलियों से विद्यार्थियों को अवगत कराना ताकि वे यथावसर उनका उपयोग कर सकें।
- अपने विचारों को संस्कृत भाषा में अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित कर सकना।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

- विद्यार्थियों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना जागृत करना।
- विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास करना।
- व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करना।

fof'k"V mís';

Jo.k

- संस्कृत के सरल पद्यों, गद्यांशों एवं नाट्यांशों को सुनकर तथा अभिनय को देखकर अर्थग्रहण करते हुए रसास्वादन कर सकना।

Hkk"k.k

- सरल प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर देने की क्षमता उत्पन्न कर सकना।
- पठित विषयों पर सरल संस्कृत में अपने विचार व्यक्त कर सकना।
- संस्कृत सुभाषितों को कण्ठस्थ कर सस्वर सुना सकना।

okpu ¼iBu½

- संस्कृत पद्यों का शुद्ध उच्चारण (लघु, गुरु, यति आदि का समुचित पालन) करते हुए, सस्वर पाठ करने की क्षमता उत्पन्न करना।
- संस्कृत गद्य का शुद्ध उच्चारण करते हुए वाचन की क्षमता उत्पन्न करना।
- संकलित नाट्यांशों का अभिनय पूर्वक वाचन करना।

y[ku

- संकलित नाट्यांशों का अभिनय पूर्वक वाचन करना।
- पठित विषयों पर सरल संस्कृत में अपना विचार लिख सकना।
- लोक का अन्वय एवं भावार्थ लिखने की क्षमता उत्पन्न करना।
- गद्यांशों, पद्यों एवं नाट्यांशों को सुनकर शुद्ध लिखने की क्षमता विकसित करना।

fpUru

- विद्यार्थियों में संस्कृत साहित्य में उपलब्ध राष्ट्रीय भावनाओं तथा मानवीय मूल्यों का विकास करने के लिए प्रेरित करना।
- संस्कृत ग्रन्थों में उपलब्ध जीवनोपयोगी विविध ज्ञान–भण्डार से परिचित कराना जिससे विद्यार्थियों में मौलिक चिन्तन की प्रवृत्ति का विकास हो सके तथा प्राप्त ज्ञान को वे अपने मौलिक चिन्तन द्वारा आधुनिक जीवन के सन्दर्भों से जोड़ सके।

ikBî lkexh

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कक्षा 11 तथा 12 के लिए निम्नलिखित पाठ्यसामग्री होगी :

1. संस्कृत पाठ्यपुस्तक
2. व्याकरण, छन्द एवं अलंकार की पुस्तक
3. संस्कृत साहित्य परिचय
4. संस्कृत लेखन (पत्र, लघुकथा, अनुच्छेद आदि)

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

कक्षा 11 तथा 12 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित एक–एक पाठ्यपुस्तक होगी जिसमें 10–10 पाठ होंगे जिसमें संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं–गद्य, पद्य, नाटक का समावेश होगा। व्याकरण, छन्द एवं अलंकार के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित एक पृथक् पुस्तक होगी। संस्कृत साहित्य के इतिहास के लिए एक पुस्तक एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित होगी जिसमें संस्कृत वाङ्मय की विविध विधाओं एवं रचनाकारों तथा कृतियों के विषय में जानकारी उपलब्ध होगी। प्रत्येक पाठ्य–पुस्तक में लगभग 20 प्रतिशत अन्य भाषाओं का संस्कृत अनुवाद तथा 30 प्रतिशत नवीन मौलिक साहित्य का समावेश किया जाना चाहिए।

fo"k;&oLrq

- पाठ्यपुस्तक में पाठों का संकलन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि भारत की राष्ट्रीय अखण्डता, भावात्मक एकता तथा विश्वसंस्कृति के विकास में संस्कृत के योगदान, जीवन के विविध सन्दर्भ, केन्द्रिक घटक, नागरिकों के मूल कर्त्तव्य तथा जीवन मूल्यों का यथासंभव समावेश हो सके।
- पाठों का संकलन करते समय दोनों कक्षाओं की संस्कृत पाठ्यपुस्तकों में गद्य, पद्य एवं नाटक इन तीनों विधाओं का प्रतिनिधित्व होगा।
- संकलित पाठ्यांश सरल, रोचक तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित होंगे।

d{kk&XI

iw.kkZad&100

vad&foHkktu

1.	**ikB~iqLrd**	40
2.	**ys[kd rFkk Ñfr ifjp;**	10
3.	**0;kdj.k**	30
4.	**laLÑr ys[ku vuqokn rFkk i=**	10
5.	**vifBr x|ka'k rFkk y?kq dFkk&ys[ku**	10

(क) **ikBîka'k**: निर्धारित पाठ्यपुस्तक — 40

(परीक्षा में इन्हीं अंशों से सरलार्थ, सप्रसंग व्याख्या, कथासारांश, प्रश्नोत्तर आदि पूछे जाएंगे।)

fu/kkZfjr ikB~iqLrd: कक्षा 11 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित 'संस्कृत पाठ्यपुस्तक''।

(ख) **ys[kd rFkk Ñfr ifjp;** — 10

पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठों के रचयिताओं एवं ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय (हिन्दी/मातृ भाषा में)।

(ग) **0;kdj.k** — 30

'kCn:i — 5

अजन्त – (पुल्लिंग) बालक, मुनि, भानु, पितृ, भ्रातृ
(स्त्रीलिंग) लता, मति, धेनु, मातृ
(नपुंसकलिंग) फल, वारि, मधु

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

सर्वनाम – तत्, एतत्, किम्,– तीनों लिंगों में, अस्मद्, युष्मद्।
संख्यावाची – एक, द्वि, त्रि, चतुर्, – तीनों लिंगों में।

/kkrq:i 5

भू, पठ्, पा (पानार्थक पिब्) गम्, खाद्, स्म, पच्, अस्, कृ, शक्, प्रच्छ् (पृच्छ्),
पत्, नश्, कथ्, चुर्, परस्मैपदी पांचों लकारों में। (लट्, लृट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ्)
सेव्, लभ्, वृध्, वृत्, रुच्, जन्, (आत्मनेपदी) पांचों लकारों में।

ÑnUr iR;; 5

क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, तव्यत्, अनीयर्, क्तिन्, ण्वुल्, तृच् ल्युट्।

rf)r iR;; 5

त्व, तल्, त्रल्, मतुप्, ठक्, टाप्, ङीप्,

v0;; 4

पुनः, उच्चैः, नीचैः, शनैः, अधः, चिरम्, नूनम्, पुरा, खलु, मुहुः, भूयः,
ह्यः, वः, अद्य, अधुना, तूष्णीम्, कुत्र, उपरि, मा, न, च।

lfU/k 6

स्वर – दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि।
व्यंजन – चुत्व, जश्त्व, ष्टुत्व, च आगम।
विसर्ग – सत्व, भात्व, णत्व, उत्व, रूत्व, लोप।

अनुशंसित पाठ्यपुस्तकें कक्षा 11 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित *व्याकरणसौरभम्* (संशोधित संस्करण)

(घ) **lLÑr y[ku] vuokn rFkk i=** 10

(i) अनुवाद कारकों पर आधारित जिनमें कर्त्ता–क्रिया की अन्विति परिलक्षित हो। 5
(ii) पत्र– प्रधानाचार्य/अध्यापक को प्रार्थना पत्र/पिता, भाई, मित्र को पत्र/दीपावली, जन्मदिन आदि पर वर्धापन पत्र। 5

(ङ) **vifBr x|ka'k** 5

संस्कृत में प्रश्नोत्तर राष्ट्रीय, मानवीय एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित होगा।
(इसमें उपयुक्त शीर्षक, एक पद में उत्तर, एक वाक्य में उत्तर, विशेषण–विशेष्य की अन्विति, विलोम शब्द, कारक–प्रयोग आदि प्रश्न पूछे जाएंगे)।

(च) **y?kdFkk y[ku ¼lLÑr esa½** 5

(प्रदत्त शब्दसूची की सहायता से रिक्तस्थानपूर्ति द्वारा)

अथवा

vuPNsn y[ku ¼lLÑr esa½

(समकालीन जीवन से जुड़े विषयों पर।)

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

vd&foHkktu

1. **ikBî iLrd** 40
2. **lLÑr lkfgR; dk bfrgkl** 20

(क) चारों वेद तथा प्रमुख उपनिषद् (सामान्य परिचय), रामायण, महाभारत, गीता।
(ख) संस्कृत साहित्य परिचय–कवि, नाटककार, पद्य, गद्य–नाटक।

3. **NUn** 10
4. **vydkj** 10
5. **lekl** 5
6. **lLÑr d y?kokD;k e dkjdk dk i;kx** 5
7. **lLÑr y[ku] y?k fucU/k** 10

(क) **ikBîk'k &** निर्धारित पाठ्यपुस्तक 40

(परीक्षा में इन्हीं अंशों से सरलार्थ, सप्रसंग–व्याख्या, कथासारांश, प्रश्नोत्तर आदि पूछे जाएंगे)।

fu/kkfjr ikBî iLrd: कक्षा 12 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित *संस्कृत पाठ्य पुस्तक।*

(ख) **lLÑr lkfgR; dk bfrgkl** 20

चारों वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता का परिचयात्मक ज्ञान। गद्यकाव्यों एवं नाटकों का परिचयात्मक ज्ञान।

fu/kkfjr ikBî iLrd: एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित *'संस्कृत साहित्य परिचय'* (संशोधित संस्करण)।

(ग) **NUn** 10

(लघु, गुरु, गण, यति का प्रयोगात्मक ज्ञान)।
अनुष्टुप् इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, शार्दूलविक्रीडित, वसन्ततिलका, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता।
(सभी छन्दों का संस्कृत में लक्षण देकर सोदाहरण लघु, गुरु, मात्रा लगाकर स्पष्ट करना)

(ग) **NUn** 10

(घ) **vydkj** 10

अनुप्रास, उपमा, यमक, श्लेष, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास,
अतिशयोक्ति, व्याजस्तुति और अन्योक्ति।
(अलंकारों की परिभाषा देकर सोदाहरण परिचय)

(ङ) **lekl**: (सभी समासों का सामान्य परिचय) 5

अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्वन्द्व, द्विगु, बहुव्रीहि।

(i) समस्तपदों का विग्रह, विग्रह किए गए पदों का समस्तपद बनाना।
(ii) समासों के नाम से परिचित कराना।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

(च) **y?k okD;k e dkjdk dk i;kx** 5

(i) कारकों का नियमानुसार वाक्यों में प्रयोग करना।

(ii) उपपद विभक्तियों का वाक्यों में प्रयोग।

निर्धारित पाठ्ययपुस्तक: छन्द, अलंकार, समास और कारक के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित *व्याकरण सौरभम्* (संशोधित संस्करण)।

(छ) **lLÑr&y[ku** (लघु निबन्ध) (10–15 वाक्य) 10

विषय–

(i) विद्यार्थी के दैनिक जीवन से सम्बन्धित।

(ii) संस्कृत तथा मानवमूल्यों पर आधारित।

(iii) वार्षिकोत्सव, पुस्तकालय, महापुरुष–जीवन–वृत्तांतादि।

(iv) संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थों (रामायण, महाभारत, गीतादि) तथा ग्रन्थकारों (वाल्मीकि, कालिदास, भर्तृहरि आदि) से सम्बन्धित।

(v) पर्यावरण से सम्बन्धित विषयों पर।

(vi) सामाजिक समता, नवीन समाज चेतना।

(vii) राष्ट्रीय गतिविधियों पर आधारित।

f'k{k.k&fof/k ,o rduhd

इस स्तर पर संस्कृत शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए अध्यापक छात्रकेन्द्रित एवं क्रियात्मक विधि का आश्रयण करेंगे जिससे विद्यार्थियों में अपेक्षित भाषा कौशलों (श्रवण, भाषण, पठन, लेखन एवं चिंतन) का समुचित विकास हो सके। साथ ही उनमें संस्कृत साहित्य की विविध विधाओं के रसास्वादन की क्षमता विकसित हो सके। अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में संस्कृत भाषा का अधिकाधिक व्यवहार वांछनीय है।

d{kk&fØ;kdyki

संस्कृत–शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से निम्नलिखित कक्षा–क्रियाकलाप सुझाए जाते हैं, जो अध्यापकों के निदर्शन मात्र के लिए हैं :

- पद्य पाठों को पढ़ाते समय अध्यापक उनका सस्वर एवं शुद्ध वाचन करें तथा विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएं (व्यक्तिगत एवं सामूहिक)
- नाट्यांश के पाठों का यथासंभव अभिनय द्वारा अध्यापन को रोचक बनाया जाए
- गद्य पाठों का शुद्ध एवं विद्यार्थियों द्वारा अनुवाचन कराना अपेक्षित है, जिसमें वे उचित गतिपूर्वक किसी भी गद्यांश को पढ़ सके तथा पठित शब्दों का आत्मविश्वास के साथ प्रयोग कर सकें।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

- कक्षा 11–12 के पाठ साहित्यिक ग्रन्थों से संकलित हैं। अतएव उनमें प्रयुक्त अलंकारों एवं छन्दों को पाठ के साथ ही विद्यार्थियों को समझाएं तथा उनका अभ्यास कराएं।
- कक्षा 11–12 के स्तर पर संस्कृत पाठ्यपुस्तक का उद्देश्य संस्कृत साहित्य की विविध विधाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना है। अतएव पाठ से सम्बद्ध विधा (गद्य/पद्य/नाटक) एवं ग्रन्थ तथा ग्रन्थकार आदि का सांगोपांग परिचय अध्यापक विद्यार्थियों को कराएं।
- व्याकरण के निर्धारित अंशों का यथासंभव अभ्यास पाठ पढाते समय विद्यार्थियों से कराया जाए, ताकि संस्कृत भाषा के शुद्ध प्रयोग में विद्यार्थी दक्ष हो सकें।
- इस स्तर पर व्याकरण के सिद्धान्त पक्ष की अपेक्षा इसके व्यवहार पक्ष/प्रयोग पक्ष (अनुप्रयुक्त व्याकरण) पर अधिक बल दें।
- व्याकरण शिक्षण को यथासंभव विद्यार्थियों के अभिनय के द्वारा रोचक बनाने का प्रयास किया जाए, ताकि उनमें नीरसता न हो।
- लोकोच्चारण, अन्त्याक्षरी, भाषण, अभिनय आदि प्रतियोगिताओं का समय–समय पर आयोजन कराएं।

eY;kdu

- पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्यपुस्तक, व्याकरण, छन्द, अलंकार एवं संस्कृत साहित्य का इतिहास इत्यादि पाठ्य–सामग्रियों का मूल्यांकन लिखित 80 प्रतिशत एवं मौखिक 20 प्रतिशत किया जाना वांछनीय है। वार्षिक परीक्षा के अतिरिक्त प्रत्येक सत्र के अन्त में सत्रीय परीक्षा अपेक्षित है जिससे विद्यार्थियों की विषयगत त्रुटियों को जानकर अध्यापक सुधारात्मक अध्यापन द्वारा यथासमय उन्हें दूर कर सकें।
- मूल्यांकन के प्रश्न विविध प्रकार के हों जैसे – वस्तुनिष्ठ, (अतिलघूत्तरात्मक तथा लघूत्तरात्मक) एवं निबन्धात्मक।
- ज्ञान, अर्थग्रहण और अभिव्यक्ति के मूल्यांकन की दृष्टि से प्रश्न होने अपेक्षित हैं।
- अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों का सतत मूल्यांकन अध्यापन के साथ ही इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वह परीक्षा में उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण होने का साधन मात्र न होकर शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया का अभिन्न अंग हो सके।
- भाषा–कौशलों के समुचित विकास के लिए, विशेषतः श्रवण एवं भाषण कौशलों के लिए, अध्यापक कक्षा में मौखिक मूल्यांकन पर बल दें।
- अध्यापक अध्यापन के उपरान्त यूनिट वाइज मूल्यांकन समय–समय पर करता रहे, ताकि उनके द्वारा अपनायी गयी शिक्षण–विधि एवं प्रयुक्त पाठ्यसामग्री की उपयुक्तता का बोध हो सके।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

संस्कृत (ऐच्छिक)

lLÑr ikB;Øe ¼,fPNd½
d{kk XI-XII ¼mPp ek/;fed Lrj½
¼foKku ,oa okf.kT; ds fo|kfFkZ;ksa ds fy,½

Hkwfedk

संस्कृत भाषा प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति की अक्षुण्ण परम्परा का आधार एवं व्यापक शिक्षा व्यवस्था की संवाहिका रही है। इसी का परिणाम है कि वैदिक काल से ही संस्कृत में ललित साहित्य के साथ–साथ शास्त्रों का विकास हुआ। तभी से हमें वेद–वेदांगों के साथ–साथ गणित, रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, वास्तुशास्त्र, रत्न–विज्ञान, आयुर्वेद, खगोल–विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन–अध्यापन की परम्परा मिलती है। संस्कृत में अद्यतन चिन्तन और वैज्ञानिक साहित्य की परम्परा आज भी जारी है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण सामान्यतः कला वर्ग तक सीमित हो गया है। फलतः विज्ञान और वाणिज्य के विद्यार्थी संस्कृत–ज्ञान–विज्ञान की परम्परा से वंचित रह जाते हैं। अतः आवश्यक है कि सभी भारतीय विद्यार्थियों को संस्कृत की व्यापक वैज्ञानिक चिंतन परम्परा से परिचित कराया जाए। +2 स्तर (कक्षा 11–12) पर विज्ञान और वाणिज्य के विद्यार्थियों के लिए ऐसा पाठ्यक्रम विकसित किया जाए जिससे वे अपने विषय के अनुरूप संस्कृत भाषा का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर सकें। अपने विषयों से सम्बद्ध संस्कृत ग्रंथों का परिचय प्राप्त कर उन ग्रंथों में उपलब्ध मौलिक वैज्ञानिक चिन्तन से परिचित हो सकें। इस स्तर पर विद्यार्थियों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए विकसित संस्कृत के इस विशेष पाठ्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्यों को निम्नलिखित रूप में परिगणित किया जा रहा है :

lkekU; mís';

- संस्कृत भाषा का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कराना।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्राचीन मनीषियों (आर्यभट, चाणक्य एवं वराहमिहिर आदि) के भारतीय मौलिक चिन्तन एवं विशिष्ट योगदान से विद्यार्थियों को परिचित कराना एवं विद्यार्थियों में राष्ट्रीय गौरव की भावना का विकास करना।
- विश्व सभ्यता व संस्कृति के विकास में संस्कृत वाङ्मय के योगदान से परिचित कराना।
- भारतीय वैज्ञानिक तथा वाणिज्यिक परम्परा के परिचय द्वारा विद्यार्थियों में तद्विषयक मौलिक चिन्तन का विकास करना।
- संस्कृत वाङ्मय में निहित मानवीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक एवं वाणिज्यिक प्रगति के प्रति विद्यार्थियों में समन्वयात्मक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

fof’k"V mn~ns’;

- विद्यार्थियों में स्तर के अनुरूप संस्कृत भाषा की व्यावहारिक योग्यता उत्पन्न करना।
- विद्यार्थियों में संस्कृत के श्रवण, भाषण, पठन और लेखन भाषा–कौशलों को विकसित कराना।
- विद्यार्थियों को संस्कृत वाङ्मय में निहित भारतीय वैज्ञानिक तथा वाणिज्यिक शब्दावली एवं शैली से परिचित कराना।
- संस्कृत के मूल वैज्ञानिक तथा वाणिज्यिक पाठ्यांशों का अपनी भाषा में रूपान्तरण करने की क्षमता उत्पन्न करना।
- निर्धारित पाठ्यसामग्री पर आधारित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में देने की क्षमता उत्पन्न करना।
- सम्बद्ध विषयों के साथ पठित सामग्री की तुलना कर अपने मौलिक चिंतन द्वारा उसे आधुनिक संदर्भों से जोड़ने की क्षमता उत्पन्न करना।
- संस्कृत वाङ्मय में निहित राष्ट्रीय भावनाओं तथा मानवमूल्यों का विकास करना।
- संस्कृत वाङ्मय के वैज्ञानिक तथा वाणिज्यिक ज्ञान की समीक्षात्मक सराहना करने की क्षमता उत्पन्न कर सकना।

Lrjkr ;kX;rk,¡

इस पाठ्यक्रम में कक्षा 11–12 उत्तीर्ण होने पर विद्यार्थियों में निम्नलिखित स्तरांत योग्यताएं विकसित होंगी:

- संस्कृत भाषा का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा। (चारों भाषाकौशलों–सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना में स्तरानुरूप दक्षता होगी।)
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय मनीषियों (आर्यभट, वराहमिहिर, चाणक्य आदि) के मौलिक चिन्तन एवं विशिष्ट योगदान से परिचित हो सकेगा तथा उनमें राष्ट्रीय गौरव की भावना का विकास होगा।
- संस्कृत परम्परा में सुरक्षित मानव मूल्यों (विश्वबन्धुत्व आदि) राष्ट्रीय मूल्यों (राष्ट्रीयता, देशभक्ति, विविधता में एकता, राष्ट्रीय अखण्डता आदि) तथा नैतिक मूल्यों का विद्यार्थियों में विकास हो सकेगा।
- विश्व सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में संस्कृत वाङ्मय के योगदान से परिचित हो सकेगा।
- भारतीय वैज्ञानिक तथा वाणिज्यिक परम्परा के परिचय द्वारा विद्यार्थियों में तद्विषयक मौलिक चिन्तन का विकास हो सकेगा।

ikB;Øe ,o ikB; lkexh

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कक्षा 11 तथा 12 के लिए निम्नलिखित पाठ्यसामग्री होगी–

1. संस्कृत पाठ्यपुस्तक
2. संस्कृत वाङ्मय में विज्ञान का इतिहास

कक्षा 11 तथा 12 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित एक–एक पाठ्यपुस्तक होगी, जिसमें 10–10 पाठ हो सकते हैं। इनका स्वरूप इस प्रकार होगा–

lkfgR;d — 3 पाठ

thou&eY;ijd 'ykd — 1 पाठ

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

oKkfud	4 पाठ
okf.kfT;d	2 पाठ

- पाठ्यपुस्तक में मूल्यप्रधान श्लोक, साहित्यिक पाठ, वैज्ञानिक पाठ तथा वाणिज्यिक पाठों का समावेश होगा।
- पाठ्यपुस्तकों में पाठों का संकलन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि भारत की राष्ट्रीय अखण्डता, भावात्मक एकता तथा विश्वसंस्कृति के विकास में संस्कृत के योगदान, जीवन के विविध संदर्भों का यथासंभव समावेश हो सके।

vad&foHkktu

I. पाठ्यपुस्तक	75 अंक
(क) भाषिकतत्त्व	25 अंक
(ख) विषय वस्तु	50 अंक
II. संस्कृत वाङ्मय में विज्ञान का इतिहास	25 अंक

f'k{k.k&fof/k ,o rduhd

इस स्तर पर संस्कृत शिक्षण को प्रभावी एवं रोचक बनाने के लिए अध्यापकों द्वारा छात्र–केन्द्रित एवं क्रियात्मक विधि का आश्रयण किया जाना वांछनीय है। संस्कृत भाषा के व्यावहारिक ज्ञान में विद्यार्थियों को दक्ष बनाने के लिए संस्कृत भाषा का अधिकाधिक मौखिक व्यवहार एवं अभ्यास कराया जाना अपेक्षित है। भाषा–ज्ञान कराते समय व्याकरण को केवल व्यवहार एवं प्रयोग द्वारा विद्यार्थियों को सिखाना चाहिए जिससे वे संस्कृत भाषा के व्यवहार में दक्ष हो सकें।

d{kk fØ;k&dyki

- पद्य पाठों को पढ़ाते समय अध्यापक उसका शुद्ध एवं सस्वर वाचन करें तथा विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएं (व्यक्तिगत एवं सामूहिक)।
- गद्य पाठों का शुद्ध वाचन एवं विद्यार्थियों द्वारा अनुवाचन कराना अपेक्षित है जिससे वे आत्मविश्वासपूर्वक संस्कृत गद्यांश को उचित गति के साथ शुद्ध रूप में पढ़ सकें।
- पाठों में प्रयुक्त व्याकरण के तत्वों को मौखिक व्यवहार एवं प्रयोग द्वारा सहज ढंग से विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा में दक्ष बनाने का प्रयास करें तथा इसके लिए प्रेरित करें कि विद्यार्थी परस्पर संस्कृत में वार्तालाप करें।
- कक्षा 11–12 के इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य संस्कृत वाङ्मय में निहित प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों के विशिष्ट योगदान से विद्यार्थियों को अवगत कराना है। अतएव पाठों को पढ़ाते समय सम्बद्ध ा वैज्ञानिक विषय (आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र, भौतिकशास्त्र इत्यादि) तथा ग्रंथ एवं ग्रंथकार का सामान्य परिचय अध्यापक विद्यार्थियों को प्रस्तुत करें तथा उसके अवबोध की परीक्षा के लिए लिखित गृह कार्य दें।
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं वाणिज्यशास्त्र के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय मनीषियों के मौलिक चिंतन एवं विशिष्ट योगदान से सम्बद्ध विषय पर कक्षा में कभी–कभी 'क्विज़' आदि प्रतियोगिता का आयोजन करना लाभप्रद होगा।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

- जीवन मूल्यों से सम्बद्ध पाठ पढ़ाते समय विद्यार्थियों में उनके व्यक्तित्व विकास के लिए समुचित प्रेरणा दें।

eY;kdu

पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्यपुस्तक एवं संस्कृत के वैज्ञानिक अथवा वाणिज्यिक साहित्य का इतिहास इत्यादि पाठ्य–सामग्रियों का मूल्यांकन लिखित 80 प्रतिशत एवं मौखिक 20 प्रतिशत किया जाना वांछनीय है। वार्षिक परीक्षा के अतिरिक्त प्रत्येक सत्र के अन्त में सत्रीय मूल्यांकन तथा पाठों के अध्यापन के पश्चात् इकाई परीक्षा अपेक्षित है जिससे विद्यार्थियों की विषयगत त्रुटियों को जानकर अध्यापक सुधारात्मक अध्यापन द्वारा यथासमय इन्हें दूर कर सकें।

- मूल्यांकन के प्रश्न विविध प्रकार के हों जैसे–वस्तुनिष्ठ, (अति लघूत्तरात्मक तथा लघूत्तरात्मक) एवं निबन्धात्मक।
- ज्ञान, अर्थग्रहण और अभिव्यक्ति के मूल्यांकन की दृष्टि से प्रश्न होने अपेक्षित हैं।
- अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों का सतत मूल्यांकन अध्यापन के साथ ही इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वह परीक्षा में उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण होने का साधन मात्र न होकर शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया का अभिन्न अंग हो सके।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

संस्कृत पाठ्यक्रम (केन्द्रिक)

कक्षा XI-XII

भूमिका

संस्कृत विश्व की एक प्राचीनतम भाषा है। यह अधिकांश भारतीय भाषाओं की जननी एवं सम्पोषिका रही है। भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, इतिहास, पुराण, भूगोल, राजनीति एवं विज्ञान की मूल स्रोत संस्कृत भाषा आज भी भारत का गौरव एवं प्राण है। यह जीवन्त रचनात्मकता का साक्ष्य भी प्रस्तुत करती है। राष्ट्रीय भावात्मक एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना के विकास में संस्कृत का योगदान विशिष्ट रहा है। *'वसुधैव कुटुम्बकम्'* के आदर्श की स्थापना करना संस्कृत की एक अनुपम देन है। अतः राष्ट्र की इस अमूल्य निधि को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना आवश्यक है।

आधुनिक संस्कृत अन्य भाषाओं की तरह भारतीय बहुभाषिकता का एक अभिन्न अंग है। जिस प्रकार संस्कृत अन्य भाषाओं के सीखने व बौद्धिक विकास में एक बहुभाषी कक्षा में सहायक सिद्ध होती है, ठीक उसी प्रकार संस्कृत सीखने में कक्षा में सहज उपलब्ध बहुभाषिकता का उपयोग किया जा सकता है।

इसी दृष्टिकोण से वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर कक्षा XI-XII केन्द्रिक पाठ्यक्रम के रूप में संस्कृत के पठन–पाठन का प्रावधान किया गया है।

सामान्य उद्देश्य

इस स्तर पर संस्कृत के पठन–पाठन के उद्देश्य निम्नांकित हैं :

- संस्कृत भाषा का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कराना।
- विद्यार्थियों में संस्कृत साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना तथा उसकी विविध विधाओं से परिचित कराना।
- अपने विचारों को संस्कृत भाषा में अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित कर सकना।
- विद्यार्थियों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना जागृत करना।
- विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास करना।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय मनीषियों के मौलिक चिंतन एवं विशिष्ट योगदान से परिचित कराना।
- संस्कृत ग्रन्थों में उपलब्ध जीवनोपयोगी विविध ज्ञान–भण्डार से परिचित कराना।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

fof'k"V mís';

Jo.k

- संस्कृत के सरल पद्यों, गद्यांशों एवं नाट्यांशों को सुनकर तथा अभिनय को देखकर अर्थग्रहण करते हुए रसास्वादन कर सकना।

Hkk"k.k

- सरल प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर देने की क्षमता उत्पन्न कर सकना।
- संस्कृत सुभाषितों को कण्ठस्थ कर सस्वर सुना सकना।

okpu ¼iBu½

- संस्कृत पद्यों का शुद्ध उच्चारण (लघु, गुरु, यति आदि का समुचित पालन) करते हुए, सस्वर पाठ करने की क्षमता उत्पन्न करना।
- संस्कृत गद्य का शुद्ध उच्चारण करते हुए वाचन की क्षमता उत्पन्न करना।
- संकलित नाट्यांशों का अभिनय पूर्वक वाचन करना।

y[ku

- पठित विषयों पर सरल संस्कृत में अपना विचार लिख सकना।
- लोक का भावार्थ लिखने की क्षमता उत्पन्न करना।

ikB~; lkexh

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कक्षा 11 तथा 12 के लिए निम्नलिखित पाठ्यसामग्री होगी:

1. **lLÑr ikB~iLrd**
2. **0;kdj.k**
3. **lLÑr lkfgR; dk bfrgkl**
4. **lLÑr y[ku**

कक्षा 11 तथा 12 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित एक–एक पाठ्यपुस्तक होगी जिसमें 10–10 पाठ होंगे जिसमें संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं–गद्य, पद्य, नाटक का समावेश होगा। व्याकरण एवं संस्कृत साहित्य के इतिहास के लिए एक–एक पुस्तक एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित होगी।

fo"k;&oLrq

- पाठ्यपुस्तक में पाठों का संकलन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि भारत की राष्ट्रीय अखण्डता, भावात्मक एकता, तथा विश्वसंस्कृति के विकास में संस्कृत के योगदान, जीवन के विविध सन्दर्भ, केन्द्रिक घटक, नागरिकों के मूल कर्त्तव्य तथा जीवन मूल्यों का यथासंभव समावेश हो सके।
- पाठों का संकलन करते समय दोनों कक्षाओं की संस्कृत पाठ्यपुस्तकों में गद्य, पद्य एवं नाटक इन तीनों विधाओं का प्रतिनिधित्व होगा।
- संकलित पाठ्यांश सरल, रोचक तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित होंगे।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

d{kk&XI

i.kkd&100

vd&foHkktu

1. **ikBî iLrd** 40
2. **lLÑr lkfgR; dk bfrgkl** 15
3. **0;kdj.k** 30
4. **lLÑr e okD; jpuk] i= y[ku ,o vuokn** 15

(क) **ikBîk'k** निर्धारित पाठ्यपुस्तक 40

(परीक्षा में इन्हीं अंशों से सरलार्थ, व्याख्या, कथासारांश, प्रश्नोत्तर आदि पूछे जाएंगे।)

fu/kkfjr ikBî iLrd: कक्षा 11 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित 'संस्कृत पाठ्यपुस्तक''।

(ख) **lLÑr lkfgR; dk bfrgkl** 15

पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठों के रचयिताओं एवं ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय (हिन्दी/मातृभाषा में)।

(ग) **0;kdj.k** 30

(i) स्वर और व्यंजनों का ज्ञान तथा उनके उच्चारण स्थान। 3

(ii) ***lfU/k***:

स्वर: दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि। 6

व्यंजन: चुत्व, ष्टुत्व, चर्त्व, जश्त्व, च आगम।

विसर्ग: सत्व, उत्व, रूत्व, लोप।

षत्व, णत्व।

(iii) ***'kCn : i***:

अजन्त (पुल्लिंग) बालक, मुनि, भानु, पितृ, भ्रातृ 6

(स्त्रीलिंग) लता, मति, नदी, धेनु, मातृ (नपुंसकलिंग) फल, वारि, मधु

सर्वनाम तत्, यत्, एतत्, किम्,– तीनों लिंगों में, अस्मद्, युष्मद्।

संख्यावाची एक, द्वि, त्रि, चतुर्, – तीनों लिंगों में।

(iv) ***/kkrq : i*** 6

भू, पठ्, पा (पानार्थक पिब्) गम्, खाद्, स्म , पच्, अस्, दा, कृ, शक्, प्रच्छ्, (पृच्छ्) पत्, नश्, कथ्, चुर्, परस्मैपदी पांचों लकारों में। (लट्, लृट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ्) सेव्, लभ्, वृध्, वृत्, रुच्, जन्, (आत्मनेपदी) पांचों लकारों में।

(v) ***dkjd***: कारकों का सामान्य ज्ञान। 5

(vi) ***v0;;***: पुनः, उच्चैः, नीचैः, शनैः, अधः, चिरम्, पुरा, मुहुः, ह्यः, वः, अद्य, अधुना, कुत्र, यत्र, तत्र, सर्वत्र, यदा, कदा, सर्वदा, उपरि, मा,। 4

vuq'kfLr ikBî iLrd: कक्षा 11 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित *व्याकरणसौरभम्* (संशोधित संस्करण)

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

(घ) **lLÑr eas okD; jpuk i= y[ku ,oa vuokn** 15

(i) संस्कृत में वाक्य रचना 5

(ii) अनुवाद कारकों पर आधारित जिनमें कर्त्ता–क्रिया की अन्विति परिलक्षित हो। 5

(iii) संस्कृत में पत्र लेखन/प्रार्थना पत्र 5

d{kk&XII

iw.kkZad&100

vad&foHkktu

1. **ikBî iqLrd** 45
2. **lLÑr lkfgR; dk bfrgkl** 15
3. **व्याकरण** 30
4. **lLÑr esa y?kq fucU/k** 10

(क) **ikBîka'k** निर्धारित पाठ्यपुस्तक 45

(परीक्षा में इन्हीं अंशों से सरलार्थ, सप्रसंग–व्याख्या, कथासारांश, प्रश्नोत्तर आदि पूछे जाएंगे)।

fu/kkZfjr ikBî iqLrd: कक्षा 12 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित *संस्कृत पाठ्य पुस्तक।*

(ख) ***lLÑr lkfgR; dk bfrgkl*** 15

(i) चारों वेद तथा प्रमुख उपनिषद् (सामान्य परिचय), रामायण, महाभारत, गीता।

(ii) संस्कृत साहित्य परिचय–कवि, नाटककार, पद्य, गद्य–नाटक।

fu/kkZfjr ikBî iqLrd: एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित *'संस्कृत साहित्य परिचय'* (संशोधित संस्करण)।

(ग) **0;kdj.k** 30

(i) ***lfU/k*** (पाठ्यपुस्तक पर आधारित) 6

(ii) ***lekl*** (सभी समासों का सामान्य परिचय) 8

अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्वन्द्व, द्विगु, बहुव्रीहि।

समासों के नाम निर्देश सहित समस्तपदों का विग्रह, विग्रह किए गए पदों का समस्तपद बनाना।

(iii) ***izR;;*** 8

कृदन्त प्रत्यय: क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, तव्यत्, अनीयर्, क्तिन्, ण्वुल्, तृच् ल्युट्।

तद्धित प्रत्यय: त्व, तल्, त्रल्, मतुप्, ठक्, टाप्, ङीप्,

(iv) ***y?kq okD;ksa esa dkjdksa dk iz;ksx*** 8

कारकों का नियमानुसार वाक्यों में प्रयोग करना।

उपपद विभक्तियों का वाक्यों में प्रयोग।

fu/kkZfjr ikBî iqLrd: व्याकरण के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित *व्याकरण सौरभम्* (संशोधित संस्करण)।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

(घ) lLÑr esa y?kq fucU/k ¼yxHkx 100 'kCnksa esa½ fo"k;& 10

(i) विद्यार्थी के दैनिक जीवन से सम्बन्धित।
(ii) संस्कृत तथा मानवमूल्यों पर आधारित।
(iii) वार्षिकोत्सव, पुस्तकालय, महापुरुष–जीवन–वृत्तांदि।
(iv) संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों से सम्बन्धित।
(v) पर्यावरण से सम्बन्धित।
(vi) राष्ट्रीय गतिविधियों पर आधारित।

f'k{k.k&fof/k ,oa rduhd

इस स्तर पर संस्कृत शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए अध्यापक छात्रकेन्द्रित एवं क्रियात्मक विधि का आश्रयण करेंगे जिससे विद्यार्थियों में अपेक्षित भाषा कौशलों (श्रवण, भाषण, पठन, लेखन एवं चिंतन) का समुचित विकास हो सके। साथ ही उनमें संस्कृत साहित्य के प्रति अभिरूचि विकसित हो सके। अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में संस्कृत भाषा का अधिकाधिक व्यवहार वांछनीय है।

d{kk&fØ;kdyki

संस्कृत–शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से निम्नलिखित कक्षा–क्रियाकलाप सुझाए जाते हैं, जो अध्यापकों के निदर्शन मात्र के लिए हैं:

- पद्य पाठों को पढ़ाते समय अध्यापक उनका सस्वर एवं शुद्ध वाचन करें तथा विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएं (व्यक्तिगत एवं सामूहिक)
- नाट्यांश के पाठों का यथासंभव अभिनय द्वारा अध्यापन को रोचक बनाया जाए
- गद्य पाठों का शुद्ध एवं विद्यार्थियों द्वारा अनुवाचन कराना अपेक्षित है, जिसमें वे उचित गतिपूर्वक किसी भी गद्यांश को पढ़ सके तथा पठित शब्दों का आत्मविश्वास के साथ प्रयोग कर सकें।
- कक्षा 11–12 के स्तर पर संस्कृत पाठ्यपुस्तक का उद्देश्य संस्कृत साहित्य की विविध विधाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना है। अतएव पाठ से सम्बद्ध विधा (गद्य/पद्य/नाटक) एवं ग्रन्थ तथा ग्रन्थकार आदि का सांगोपांग परिचय अध्यापक विद्यार्थियों को कराएं।
- व्याकरण के निर्धारित अंशों का यथासंभव अभ्यास पाठ पढाते समय विद्यार्थियों से कराया जाए, ताकि संस्कृत भाषा के शुद्ध प्रयोग में विद्यार्थी दक्ष हो सकें।
- इस स्तर पर व्याकरण के सिद्धान्त पक्ष की अपेक्षा इसके व्यवहार पक्ष/प्रयोग पक्ष (अनुप्रयुक्त व्याकरण) पर अधिक बल दें।
- लोकोच्चारण, अन्त्याक्षरी, भाषण, अभिनय आदि प्रतियोगिताओं का समय–समय पर आयोजन कराएं।

eY;kadu

- पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्यपुस्तक, व्याकरण एवं संस्कृत साहित्य का इतिहास इत्यादि पाठ्य–सामग्रियों का मूल्यांकन लिखित 80 प्रतिशत एवं मौखिक 20 प्रतिशत किया जाना वांछनीय है। वार्षिक परीक्षा के अतिरिक्त प्रत्येक सत्र के अन्त में सत्रीय परीक्षा अपेक्षित है जिससे विद्यार्थियों की विषयगत त्रुटियों को जानकर अध्यापक सुधारात्मक अध्यापन द्वारा यथासमय उन्हें दूर कर सकें।

Downloaded From: http://cbseportal.com

Downloaded From: http://cbseportal.com

- मूल्यांकन के प्रश्न विविध प्रकार के हों जैसे – वस्तुनिष्ठ, (अतिलघूत्तरात्मक तथा लघूत्तरात्मक) एवं निबन्धात्मक।
- ज्ञान, अर्थग्रहण और अभिव्यक्ति के मूल्यांकन की दृष्टि से प्रश्न होने अपेक्षित हैं।
- अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों का सतत मूल्यांकन अध्यापन के साथ ही इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वह परीक्षा में उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण होने का साधन मात्र न होकर शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया का अभिन्न अंग हो सके।
- भाषा–कौशलों के समुचित विकास के लिए, विशेषतः श्रवण एवं भाषण कौशलों के लिए, अध्यापक कक्षा में मौखिक मूल्यांकन पर बल दें।
- अध्यापक अध्यापन के उपरान्त यूनिट वाइज मूल्यांकन समय–समय पर करता रहे, ताकि उनके द्वारा अपनायी गयी शिक्षण–विधि एवं प्रयुक्त पाठ्यसामग्री की उपयुक्तता का बोध हो सके।

Downloaded From: http://cbseportal.com